



**SE-7333** Seat No. \_\_\_\_\_  
**Second Year B. A. Examination**  
**March / April – 2006**  
**Hindi**  
**(Compulsory)**  
**(New Course)**

Time : 3 Hours]

[Total Marks : 100

- सूचना : (१) सभी प्रश्नों के अंक समान हैं ।  
(२) प्रश्नपत्र तीन खंडों में विभाजित है ।

**खण्ड—क**

- १ जोंक एकांकी की कथा लिखिए और उसकी विशेषताएँ बताइए । २०

**अथवा**

- १ 'औरंगजेब की आखिरी रात' एकांकी के आधार पर जीनत का चरित्र—  
चित्रण कीजिए । २०

- २ 'जीवन में साहित्य का स्थान' लेख का सारांश लिखकर उसकी विशेषताएँ  
प्रस्तुत कीजिए । २०

**अथवा**

- २ एकांकी कला की दृष्टि से 'संस्कार और भावना' एकांकी का मूल्यांकन कीजिए। २०

- ३ किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए : २०

- (१) 'स्ट्राईक' एकांकी में व्यंग्य ।  
(२) 'बंदी' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता ।  
(३) 'मेरी वसीहत' में व्यक्त नहेरुजी की भावना ।  
(४) 'हाथी के दाँत' में मानव प्रकृति पर व्यंग्य ।

**अथवा**

- ३ ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए ।

- (अ) गांधीजीने इतना विश्वव्यापी वैभव पाया, वह कोई जादू या चमत्कार  
नहीं था, उसके पीछे एक तत्व था, अत्यंत सीधा सादा, वह था अपने  
आपके प्रति सच्चे रहो।

**अथवा**

**SE-7333]**

**1**

**[Contd...**

- (अ) “गंगा तो भारत की सभ्यता का प्रतीक रही है, निशान रही है, सदा बदलती, फिर वही गंगा की गंगा ।”
- (ब) “ओह, मैं क्या करू क्या करू ? यह क्या हो रहा है, जिसे मैं प्रेम करती थी, जिसे मैं अपना बनाना चाहती थी, पर आज स्वयं मेरे घर आ रहा है, मेरे घर, मेरे पति का मित्र बनकर ।”

अथवा

- (ब) ‘अब हमारा आखरी वक्त करीब है ।’

खण्ड—ख

(पत्र—लेखन)

- ४ (अ) कॉलेज पुस्तकालय के लिए पुस्तकों की प्रतियाँ मंगवाने के लिए प्रकाशन के द्वारा मिलते हुए कमिशन की पूछताछ सम्बन्धी पत्र लिखिए । १०

अथवा

- (अ) चेक खो जाने के कारण स्टेट बैंक ऑफ सौराष्ट्र के मॅनेजर को भुगतान रोकने का पत्र लिखिए । १०
- (ब) ज्ञानधारा विद्यालय, पो.बो. नं. ३०४, राजकोट में ‘हिन्दी शिक्षक’ का पद रिक्त हुआ है । उस पद के लिए अपनी शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभव प्रदर्शित करते हुए विद्यालय के आचार्य के नाम ‘आवेदन पत्र’ लिखिए । १०

अथवा

- (ब) नया खाता खुलवाने सम्बन्धी बैंक को पत्र लिखिए । १०

खण्ड—ग

- ५ (अ) गद्यांश का सार अपने शब्दों में लिखे : १०

मनुष्य उत्सव प्रिय होते हैं । उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य आनन्द-प्राप्ति है । यह तो सभी जानते हैं कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है । आवश्यकता की पूर्ति होने पर सभी को सुख होता है । पर, उस सुख और उत्सव के इस आनन्द में बड़ा अन्तर है । आवश्यकता अभाव सूचित करती है । उससे यह प्रकट होता है कि हममें किसी बात की कमी है । मनुष्य जीवन ही ऐसा है कि वह किसी भी अवस्था में यह अनुभव नहीं कर सकता

कि अब उस के लिए कोई आवश्यकता नहीं रह गई है कि एक बाद दूसरी वस्तु की चिन्ता उसे सताती ही रहती है । इसीलिए किसी एक आवश्यकता की पूर्ति से उसे जो सुख होता है, वह अत्यंत क्षणिक होता है, क्योंकि तुरंत ही दूसरी आवश्यकता उपस्थित हो जाती है । उत्सव में हम किसी बात की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते । यही नहीं, उस दिन हम अपने काम-काज छोड़कर विशुद्ध आनन्द की प्राप्ति करते हैं । यह आनन्द जीवन का आनन्द है, काम का नहीं । उस दिन हम अपनी सारी आवश्यकताओं को भूलकर केवल मनुष्यत्व का ख्याल करते हैं । उस दिन हम अपनी स्वार्थ-चिन्ता छोड़ देते हैं, कर्तव्य-भार की उपेक्षा कर देते हैं तथा गौरव और सम्मान को भूल जाते हैं । उस दिन हममें उच्छृंखलता आ जाती है, स्वच्छन्दता आ जाती है । उस रोज हमारी दिनचर्या बिलकुल नष्ट हो जाती है । व्यर्थ घूमकर, व्यर्थ काम कर, व्यर्थ खा-पीकर हमलोग अपने मनमें यह अनुभव करते हैं कि हमलोग सच्चा आनन्द पा रहे हैं ।

(ब) निम्न लिखित गद्यांश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

१०

જુદા જુદા રાષ્ટ્રોની માફક જુદા-જુદા ધર્મ પણ હમણા તો કસોટી પર ચડી રહ્યા છે. ઈશ્વરીય કૃપા અને પ્રકાશનું દાન કોઈ એક કોમ અથવા જાતિ માટે નથી, તે પ્રકાશ તો ભેદભાવ વગર પ્રભુના સઘળા સેવકો માટે છે, જેઓ તેની સમીપે રહેતા હોય. જે જાતિ તથા ધર્મ અન્યાય, અસત્ય અને પશુબળ ઉપર પોતાનું અસ્તિત્વ ટકાવી રાખવા માંગે છે, તેનું દુનિયામાંથી નામ-નિશાન ભૂંસાઈ જશે જ. ઈશ્વર પ્રકાશ છે, અંધકાર નથી : તે પ્રેમ છે, ઘૃણા નથી : તે સત્ય છે, અસત્ય નથી. ઈશ્વર એક જ મહાન છે. આપણે તેની ચરણરજ છીએ.